दिल्ली। महाबोधी इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर,लेह लद्दाख द्वारा इंटरनेशनल कम्पैशन डे पर आयोजित कार्यक्रम में समाज में दया भाव के पुनर्जागरण हेतु अमूल्य योगदान के लिए ब्र.कु. बिन्नी को 'महाकरुणा अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए लेह महाबोधी तथा अन्य धर्म प्रमुख।

हाथरस-उ.प्र.। होली के उत्सव पर व्यसनों की होलिका दहन करते हुए जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह, ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य।

कादमा-हरियाणा। किसान क्लब बडराई का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. वसुधा, सोहनलाल,जिला सहायक महाप्रबंधक नाबार्ड, राजेन्द्र यादव, सचिव,ग्रामीण विकास मंडल तथा अन्य।

पटियाला-पंजाब। त्रिपड़ी टाउन सेवाकेन्द्र की पाँचवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित 'नई सोच नया विश्वास' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हरप्रीत सिंह गिल पीटर,ऑफिसर,टोरंटो पुलिस,कनाडा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. शांता, ब्र.कु. तमन्ना तथा डॉ. राकेश वर्मा।

आगरा-सिकन्दरा से.7। महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं पार्षद क्षमा बहन, सुरभि संस्थान की अध्यक्षा वंदना अग्रवाल, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

भादरा-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम के दौरान परमात्म स्मृति में नगरपालिका चेयरमैन रहीशा बानो, लॉर्ड कृष्णा स्कूल की प्रिन्सीपल सुनीता चौबे, प्रणामी कॉलेज की प्रिन्सीपल डॉ. सुमन, ब्र.कु. चन्द्रकान्ता, लॉर्ड कृष्णा स्कूल के चेयरमैन विजय चौबे, शान्ति निकेतन के संरक्षक विजय जी, पार्षद हरिप्रकाश शर्मा तथा अन्य।

अहंकार का बहिष्कार

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

उक्ति प्रसिद्ध है कि अहंकारी नर को एक दिन लज्जित होकर सिर नीचा अवश्य करना पड़ता है अथवा कि मनुष्य को जितना अधिक अभिमान होता है उसे अन्त में उतनी ही अधिक ऊँचाई से गिरने-जैसा दु:ख अनुभव करना पड़ता है। उस समय उसकी सारी अकड़बाजी चूर हो जाती है और उसे बड़ी वेदना होती है। अत: अहंकारी मनुष्य तो उस सूखे और लम्बे बाँस की तरह है जोकि जंगल के अन्य बांसों के साथ टकरा कर आग लग जाने से आखिर भस्मसात हो जाता है।

आज मनुष्य जिस धन का गर्व करता है कल वह धन उसका साथ छोड़ सकता है क्योंकि धन कोई एक-रस, स्थिर और अविनाशी चीज़ नहीं है बल्कि धन को चंचल माना गया है (Riches changes hands)। आज मनुष्य को जिस तन-शक्ति या जन-शक्ति का अभिमान है, वह भी तो एक दिन छोड़ जाने वाली है। ऐसा तो मनुष्य को दूसरों की जीवन-गाथा से भी मालूम होता है और प्रत्यक्ष भी दिखाई पड़ता है। अत: जबकि संसार की ऐसी ही गति है तो फिर अभिमान किस बात का?

अभिमान सभी विकारों का मूल है

भगवान कहते हैं कि यह देह-अभिमान ही सभी पापों और विकारों का मूल है और इसलिए यही सभी तापों का और माया के शापों का भी मूल है। लोग तो पाँचों विकारों में से काम को सबसे पहले और अहंकार को सबसे बाद में गिनते हैं परन्तु वास्तव में सबसे पहला विकार है अहंकार ही, क्योंकि इसी से ही दूसरे विकारों की भी उत्पत्ति होती है। देह का अभिमानी मनुष्य ही स्वयं को पुरुष के भान और दूसरे को स्त्री की दृष्टि से देखकर व्यक्तभाव को प्राप्त होता है और वासनाओं के वश होता है अर्थात् काम रूपी कटारी से दूसरे को काटता है। अभिमानी मनुष्य के अभिमान की भावना को ठेस लगने से ही उसमें क्रोध पैदा होता है। पुनश्च, अपने अभिमान को, अपने पोज़ीशन (Position) और शान को बनाए रखने के लिए ही मनुष्य लोभ का और रिश्वत आदि का आसरा लेता है। फिर, जिन चीज़ों को वह अहंकार तथा लोभ के वश होकर इकट्ठा करता है, उनमें उसका मोह तो हो ही जाता है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि अहंकार अन्य सभी विकारों का बीज है। अत: परमपिता परमात्मा कहते हैं कि अब अभिमान को तथा देह-अहंकार को छोड़कर देही-अभिमानी (Soul-conscious) बनो।

अहंकार का भविष्य

अब हम परमपिता परमात्मा द्वारा जान चुके हैं कि शीघ्र ही इस पुरानी, कलियुगी दुनिया का महाविनाश होने वाला है और सतयुगी पावन दुनिया स्थापन हो रही है। यह बात हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट है, यह कोई कल्पना नहीं है। परमपिता शिव ने अब यह भी समझाया है कि इस संगम समय में जो जितना निर-अभिमानी और नम्र-चित्त बनेगा उसका जीवन उतना ही श्रेष्ठ बनेगा और वह आने वाली पावन तथा दैवी सृष्टि में उतना उच्च देव पद प्राप्त करेगा। फिर, नम्र-चित्त मनुष्य का प्रत्यक्ष फल हम इस जीवन में भी देख रहे हैं कि वह शान्त और प्रिय होता है और उसे यम का भय भी नहीं होता। अत: जबकि अहंकारी का परिणाम और निरहंकारी की प्रारब्ध दोनों हमारे सामने है और जबकि इस अहंकारी सृष्टि का विनाश होना ही है, तो जैसे परमपिता परमात्मा निराकार और निरहंकारी हैं और इस कारण बहुत ही लोकप्रिय हैं, वैसे ही हमें भी अब निज ज्योति-बिन्दु स्वरूप में स्थित होना चाहिए क्योंकि इस पुरुषार्थ से ही हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अब हमें जीते-जी अपने अहंकार को मारना चाहिए तभी हमें जीवनमुक्ति पद की तथा अत्यन्त सुख की प्राप्ति होगी। अहंकारी मनुष्य तो उस अति सुखमय देव-सृष्टि में जा ही नहीं सकता बल्कि उसे तो धर्मराजपुरी में दण्ड भोगना पड़ता है। तो जबकि अहंकारी तथा निरहंकारी दोनों का भविष्य स्पष्ट रूप से हमारे सामने है तो हमें चाहिए कि अब हम नम्र-चित्त बनें तथा देह-अभिमान को छोड़कर देही-निश्चय (Soul-consciousness) में स्थिति प्राप्त करें।

परमपिता परमात्मा शिव की शुभ सम्मति

परमपिता परमात्मा कहते हैं कि आज विश्व में अशान्ति की सारी समस्या अहंकार ही के कारण है। कोई स्वयं को सेठ-स्वामी माने बैठा है तो कोई धनी-दानी। कोई स्वयं को नेता मानकर अभिमान कर रहा है तो कोई अभिनेता। इस प्रकार सभी अहंकार के नशे में चूर हैं। उन्हें यह मालूम ही नहीं है कि सतयुग में दास-दासियाँ भी इनसे अधिक सुखी होते हैं, उनके पास भी सोने के महल होते हैं। उस दैवी मर्यादा वाली सृष्टि में न कोई किसी का अपमान करता है और न किसी को किसी चीज़ का अभिमान होता है। निर-अभिमानी बनने के कारण ही तो उनकी इतनी उच्च प्रारब्ध होती है। अत:जबकि हमारी उस उच्च स्थिति से हमें अभिमान ने ही गिराया है तो उस गिरी हुई स्थिति में प्राप्त तमोगुणी वस्तुओं का अभिमान करना तो निरी मूर्खता है। हमें तो मन में यह सोचना चाहिए कि आज सतयुग के स्वर्ण महल की भेंट में हमारे कांटों के ताज वाला धनवान अथवा नेता पद है और वहाँ के फुल-प्रूफ (Full-proof) विमान की बजाए जो कार है, वह सब बेकार हैं, क्योंकि इनका संचय करने के पीछे कोई-न-कोई विकार है और इनके साथ दु:ख लगा हुआ है। सतयुगी हीरे-तुल्य जीवन की भेंट में तो वर्तमान जीवन कौड़ी तुल्य है! अत: इसका अभिमान कैसा?

अत:परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि - ''हे वत्स, मैं थोड़े समय के लिए ही तो अब इस सृष्टि में आया हूँ। मैं अधिक समय तो यहाँ ठहरता भी नहीं हूँ क्योंकि शीघ्र ही सतयुगी पावन सृष्टि की स्थापना करके मुझे जाना है। अत: सारे कल्प की आयु की भेंट में मैं कह सकता हूँ कि मैं एक घड़ी भर के लिए ही आप मनुष्यात्माओं की इस सृष्टि में आया हूँ। अब छोटे-बड़े सभी के सिर पर काल खड़ा है क्योंकि सब मानो मरे ही पड़े हैं, अब इनके विनाश में कोई अधिक समय शेष नहीं है। अत: जबकि इस भंभोर को आग लगनी ही है तो उस समय आप कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकोगे। पुरुषार्थ का समय तो उससे पहले है अर्थात् यह दो घड़ियाँ ही हैं। अत: अब यह अभिमान छोड़ दो कि मैं नेता हूँ, सेठ हूँ, समझदार हूँ, आदि-आदि। अब इनकी ओर मन को केन्द्रित न करके मेरी ओर अटेन्शन (Attention) दो! अब यह सब कुछ मेरे अर्पण करके आप ट्रस्टी अर्थात् निमित्त होकर इनसे कार्य लो। अब देह का भी अभिमान छोड़ दो और सर्वस्व सहित मेरे हो जाओ तो मेरा सब-कुछ आपका हो जायेगा। बताओ क्या इतना सस्ता और लाभदायक सौदा भी स्वीकार नहीं है!''